I. उत्पादन

वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही के दौरान भारत की 6.1 प्रतिशत जीडीपी वृद्धि पूर्ववर्ती दो तिमाहियों के दौरान दर्ज की गयी 5.8 प्रतिशत की वृद्धि की तुलना में संयमित समुत्थान की द्योतक है, हालाँकि यह अभी भी 7.8 प्रतिशत की उस वृद्धि से कम है, जो वर्ष 2008-09 की पहली तिमाही में हासिल हुई थी, और वर्ष 2003-08 के दौरान हासिल की गयी 8.8 प्रतिशत की औसत वृद्धि से कम है। पिछली तिमाही से क्रमिक पुन:प्राप्ति औद्योगिक उत्पादन में उल्लेखनीय बदलाव से प्रेरित थी। वर्ष 2009-10 में अप्रैल से अगस्त के बीच उद्योग और प्रमुख आधारिकी क्षेत्रों, दोनों में त्वरित वृद्धि देखी गयी और सेवा-क्षेत्र कार्यकलापों के कुछ अग्रणी संकेतक भी यह बताते हैं कि वृद्धि की गति तेज हुई है। तथापि, अपूर्ण मानसून के साथ-साथ कुछ राज्यों में आयी बाढ़ तथा उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव से समग्र वृद्धि संभावनाओं के लिए अधोमुखी जोखिम उत्पन्न होती है।

I.1 वर्ष 2008-09 की दूसरी छमाही के दौरान वृद्धि में स्पष्टे गिरावट दर्ज किये जाने के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था में समुत्थान के लक्षण दिखाई पड़े, जिसमें वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही के दौरान जीडीपी में उच्चतर वृद्धि और औद्योगिक उत्पादन एवं प्रमुख आधारिकी कार्यकलापों में समुत्थान की गति तेज होना शामिल है। केंद्रीय सांख्यिकी संगठन (सीएसओ) द्वारा अगस्त 2009 में जारी किये गये अनुमानों के अनुसार वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही के दौरान वास्तविक जीडीपी वृद्धि 6.1 प्रतिशत निर्धारित की गयी, जो वर्ष 2008-09 की पूर्ववर्ती दो तिमाहियों के दौरान दर्ज की गयी 5.8 प्रतिशत की वृद्धि से अधिक है। वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही के दौरान वृद्धि का समर्थन औद्योगिक कार्यकलाप में प्रतिक्षेप से हुआ, खास कर विनिर्माण क्षेत्र में बदलाव द्वारा (पिछली तिमाही में ऋणात्मक

वृद्धि से) और सेवा क्षेत्र में वृद्धि की सापेक्ष समुत्थान शक्ति द्वारा, भले ही हाल में इसमें गिरावट आयी है। तथापि, वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही के दौरान वास्तविक जीडीपी वृद्धि वर्ष 2008-09 की पहली तिमाही के दौरान दर्ज की गयी 7.8 प्रतिशत की वृद्धि से कम थी, जो समकालिक वैश्विक मंदी के प्रभाव के बने रहने को दर्शाता है, भले ही समुत्थान के उभरते संकेत लक्षित हो रहे हैं (सारणी 1.1)।

कृषि की स्थिति

I.2 अपूर्ण मानसून अल्पावधि में भारत में वृद्धि की गति को पुन: प्राप्त करने में अवमंदन का प्रमुख कारक बन कर उभरा है। दक्षिण-पश्चिम मानसून केरल में 23 मई 2009 को आया, अर्थात् सामान्य निर्धारित अवधि के एक सप्ताह पूर्व। तथापि, मानसून के आगे बढ़ने में काफी विलंब हुआ और प्रत्येक बार विलंब होने के कारण वर्षा कम हुई और सूखे जैसी स्थिति की संभावना बढ़ती गयी। मौसम के दौरान पूरे देश में संचयी वर्षा (30 सितंबर 2009 तक) सामान्य से 23 प्रतिशत कम हुई, जबकि पिछले वर्ष की तदनुकूल अवधि के दौरान वर्षा सामान्य से 1 प्रतिशत कम हुई थी। रिज़र्व बैंक के खाद्यान्न उत्पादन भारित सूचकांक के अनुसार वर्षा में अधिक कमी हुई (सामान्य से 27 प्रतिशत कम), जबकि पिछले वर्ष की तदनुकूल अवधि के दौरान वर्षा अच्छी (सामान्य

सारणी 1.1 : वास्तविक सकल देशी उत्पाद की वृद्धि दर@

(प्रतिशत)

क्षेत्र	2007-08*	2008-09#	2008-09				2009-10
			ति1	ति2	ति3	ति4	ति1
1	2	3	4	5	6	7	8
1. कृषि और संबद्ध कार्यकलाप	**4.9**	**1.6**	**3.0**	**2.7**	**-0.8**	**2.7**	**2.4**
	(17.8)	**(17.0)**					
2. उद्योग	**7.4**	**2.6**	**5.1**	**4.8**	**1.6**	**-0.5**	**4.2**
	(19.2)	**(18.5)**					
2.1 खनन और उत्खनन	3.3	3.6	4.6	3.7	4.9	1.6	7.9
2.2 विनिर्माण	8.2	2.4	5.5	5.1	0.9	-1.4	3.4
2.3 बिजली, गैस और जल आपूर्ति	5.3	3.4	2.7	3.8	3.5	3.6	6.2
3. सेवाएं	**10.8**	**9.4**	**10.0**	**9.8**	**9.5**	**8.4**	**7.7**
	(63.0)	**(64.5)**					
3.1 व्यापार,होटल, रेस्टोरेंट परिवहन, भंडारण और संचार	12.4	9.0	13.0	12.1	5.9	6.3	8.1
3.2 वित्तपोषण, बीमा, स्थावर संपदा और कारोबारी सेवाएं	11.7	7.8	6.9	6.4	8.3	9.5	8.1
3.3 सामुदायिक, सामाजिक और वैयक्तिक सेवाएं	6.8	13.1	8.2	9.0	22.5	12.5	6.8
3.4 निर्माण	10.1	7.2	8.4	9.6	4.2	6.8	7.1
कारक लागत पर वास्तविक सकल देशी उत्पाद	**9.0**	**6.7**	**7.8**	**7.7**	**5.8**	**5.8**	**6.1**
	(100)	**(100)**					

ज्ञापन: (राशि करोड़ रुपए में)

कारक लागत पर वास्तविक सकल देशी उत्पाद (1999-2000)	31,29,717	33,39,375					
चालू बाजार कीमतों पर सकल देशी उत्पाद	47,23,400	53,21,753					

@: 1999-2000 की कीमतों पर *: त्वरित अनुमान #: संशोधित अनुमान

टिप्पणी: कोष्ठक के आंकड़े वास्तविक सकल देशी उत्पाद में हिस्सा दर्शाते हैं।

स्रोत: केंद्रीय सांख्यिकीय संगठन।

चार्ट I.1: दक्षिण-पश्चिम मानसून: 2009 (1 जून से 30 सितंबर)

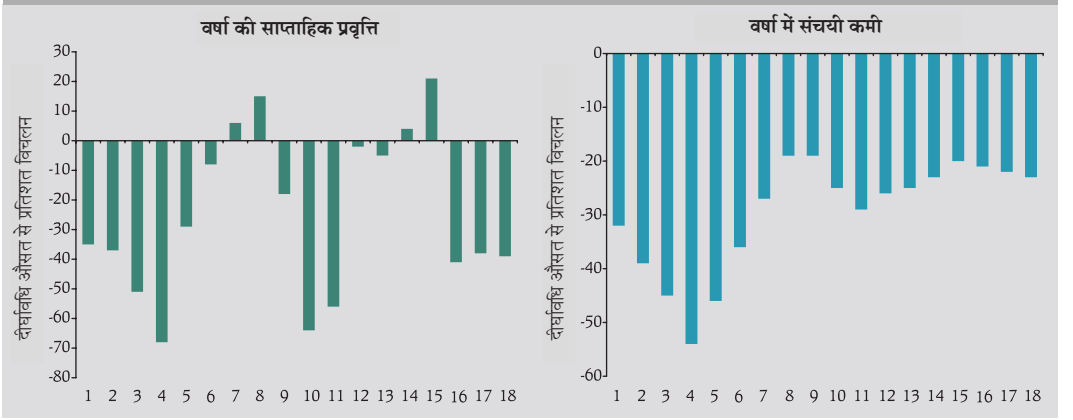

से 4 प्रतिशत अधिक) हुई थी। दक्षिण-पश्चिम मानसून मौसम के दौरान वर्षा भारतीय मौसम विज्ञान विभाग द्वारा अगस्त में जारी किये गये उस संशोधित पूर्वानुमान से भी काफी कम हुई, जिसके अनुसार मौसम के दौरान (जून से सितंबर 2009) वर्षा के दीर्घावधि औसत के 93 प्रतिशत पर सामान्य से कम होने (± 4.0 प्रतिशत की प्रतिमान भूल के साथ) की संभावना व्यक्त की गयी थी। वर्षा के कालगत वितरण से पता चलता है कि जून की वर्षा में कमी होने के बारे में प्रारंभिक चिंता में जुलाई में कुछ कमी आयी, जिससे बुआई की स्थिति सुधरी। पुन:, अगस्त 2009 के पहले पखवाड़े में कम वर्षा हुई और बाद में महीने के मध्य में अधिक वर्षा हुई (चार्ट I.1)।

I.3 वर्षा के स्थानिक वितरण से पता चलता है कि मौसम विज्ञान विभाग के 36 उपविभागों में से 13 उपविभागों में (पिछले वर्ष 32 उपविभागों में) संचयी वर्षा अधिक/सामान्य हुई (चार्ट I.2)। मध्य अगस्त 2009 में वर्षा के तेज होने के परिणामस्वरूप देश के जलाशय स्तर में काफी सुधार हुआ, हालाँकि यह पिछले वर्ष के स्तर से कम बना हुआ है। 22 अक्तूबर 2009 की स्थिति के अनुसार देश के 81

चार्ट I.2: दक्षिण-पश्चिम मानसून:2009 (1 जून से 30 सितंबर)

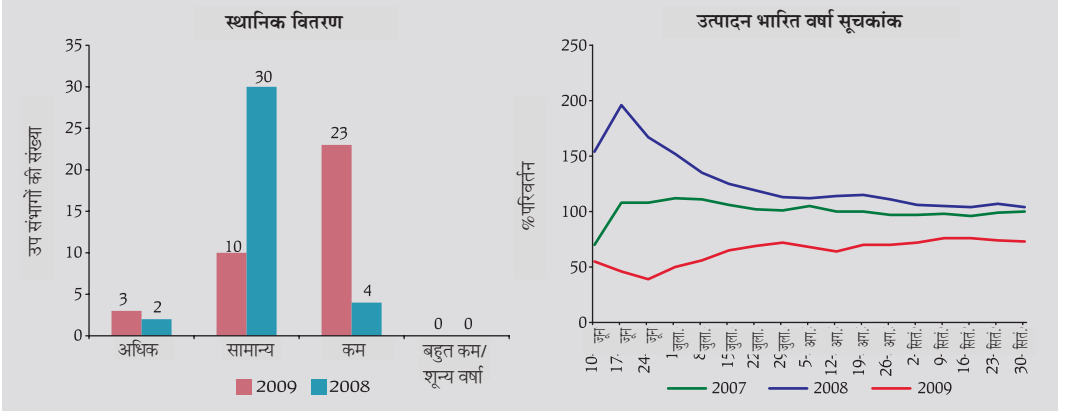

प्रमुख जलाशयों में जल का भंडार पूर्ण जलाशय स्तर (एफआरएल) का 64.0 प्रतिशत था (पिछले वर्ष की तदनुकूल अवधि में 72.0 प्रतिशत)।

I.4 30 सितंबर 2009 की स्थिति के अनुसार 12 राज्यों में लगभग 300 जिलों को अंशत: या पूर्णत: सूखा-प्रभावित घोषित किया गया। मौसम के दौरान कुछ राज्यों में बाढ़ भी आयी, यथा, कर्नाटक, असम, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, केरल और आंध्र प्रदेश में।

I.5 अपूर्ण दक्षिण-पश्चिम मानसून का प्रभाव खरीफ की बुआई पर पड़ा है, जो पिछले वर्ष की तुलना में 5.4 प्रतिशत कम है। बुआई की नवीनतम स्थिति से पता चलता है कि चालू खरीफ मौसम के दौरान सभी फसलों की बुआई 16 अक्तूबर 2009 की स्थिति के अनुसार सामान्य स्तर के 92 प्रतिशत पर थी (सारणी 1.2)। अधिकांश दालों और कपास की बुआई पिछले वर्ष के स्तर से अधिक हुई है, जबकि मोटे अनाज और जूट की बुआई पिछले वर्ष के समान ही हुई है, हालाँकि धान की बुआई काफी प्रभावित हुई है (पिछले वर्ष के स्तर से 16 प्रतिशत कम)। अन्य फसलों में, जिनकी बुआई पर कुछ प्रभाव पड़ा है, शामिल हैं तिलहन और गन्ना। इस बात पर विचार करते हुए कि खरीफ धान एक महत्वपूर्ण फसल है, जो भारत में चावल के कुल उत्पादन के लगभग 86 प्रतिशत और खाद्यान्नों के कुल उत्पादन के 36 प्रतिशत के लिए जिम्मेवार है, इसकी कम बुआई से वर्ष 2009-10 के दौरान समग्र खाद्यान्न उत्पादन कम होने की आशंका है।

I.6 दक्षिण-पश्चिम मानसून मौसम के दौरान वर्षा में समग्र कमी के प्रभाव का मूल्यांकन अगस्त के पिछले हिस्से में और सितंबर में मानसून के तेज होने के संदर्भ में किया जाना है, जिसने खड़ी फसलों की पैदावार में सुधार करने में मदद की

सारणी 1.2 : खरीफ फसल के बुआई क्षेत्र की प्रगति : 2009-10

(मिलियन हेक्टर)

फसल	सामान्य क्षेत्र	बुआई क्षेत्र (16 अक्तूबर 2009 को)			प्रतिशत परिवर्तन
		2008	2009	सांख्यिक घट-बढ़	
1	2	3	4	5	6
धान	39.2	38.8	32.7	-6.1	-15.7
मोटे अनाज	23.0	20.6	20.7	0.1	0.3
जिसमें से :					
बाजरा	9.7	8.5	8.5	0.0	0.2
ज्वार	3.9	2.9	3.1	0.2	6.6
मक्का	6.8	7.1	7.1	0.1	0.9
कुल दालें	11.2	9.6	10.1	0.5	5.6
कुल तिलहन	16.9	18.4	17.5	-1.0	-5.2
जिसमें से :					
मूंगफली	5.4	5.3	4.4	0.9	-16.6
सोयाबीन	7.8	9.6	9.6	0.0	-0.2
गन्ना	4.4	4.4	4.3	-0.1	-2.9
कपास	8.7	8.5	9.6	1.1	13.4
जूट	0.8	0.7	0.7	0.0	-2.0
सभी फसलें	**104.2**	**101.1**	**95.7**	**-5.4**	**-5.4**

स्रोत : कृषि मंत्रालय, भारत सरकार।

है। इसके अतिरिक्त देश के सिंचित क्षेत्र, यथा, पंजाब और हरियाणा, में वर्षा और कम हुई है, जहाँ सिंचाई की उपलब्धता, खास कर बर्फ भरी उत्तरी नदी घाटी में, उत्पादन में संभावित हानि की कुछ भरपाई कर सकती है। इस खरीफ मौसम में धान की कम बुआई की क्षतिपूर्ति देश के कुछ भागों में कम अवधि वाली बोरो धान (खरीफ के बाद) की बुआई से और मूँगफली की कम बुआई की क्षतिपूर्ति अंशत: तोरिया की बुआई से, जो खरीफ मौसम के अंत में की जा सकती है, की जा रही है। इसके अतिरिक्त, दक्षिण-पश्चिम मानसून की विलंब से वापसी रबी फसल के लिए शुभ है, खास कर जाड़े में उगाये जाने वाले गेहूँ और तिलहनों के लिए, जो मिट्टी में अधिक नमी के कारण संभव होता है। इसके अतिरिक्त, अब भारतीय कृषि काफी विविधीकृत हो गयी है। खरीफ 'अनाज, दालें और तिलहन' कुल कृषि उत्पादन के केवल 20 प्रतिशत के लिए योगदान करते हैं। रबी का योगदान समग्र कृषि जीडीपी में और 20 प्रतिशत का होता है। शेष 60 प्रतिशत उत्पादन संबद्ध क्षेत्रों में होता है, जिसमें बागवानी, पशुधन और मत्स्यपालन शामिल है, जो पिछले कुछ वर्षों से 5 प्रतिशत से अधिक दर पर बढ़ता रहा है।

I.7 इसके अतिरिक्त, हाल के वर्षों में कुल खाद्यान्न उत्पादन में रबी उत्पादन का हिस्सा बढ़ता रहा है और वर्ष 2008-09 के दौरान समग्र खाद्यान्न उत्पादन में रबी लगभग आधे हिस्से के लिए जिम्मेवार रही है। वर्ष 2008-09 के दौरान खरीफ की बुआई कम होने के बावजूद (-2.3 प्रतिशत), खाद्यान्नों का उत्पादन सबसे अधिक हुआ, जो मुख्यत: रबी की अधिक बुआई (2.9 प्रतिशत) के कारण हुआ, जिसने खरीफ उत्पादन में हुई हानि की क्षतिपूर्ति की (चार्ट I.3)। कुछ राज्यों में सूखे की स्थिति को देखते हुए भारत सरकार ने अनेक समयोचित उपाय आरंभ किये हैं, जिनमें उन राज्यों में, जहाँ वर्षा 50 प्रतिशत कम हुई है, डीजल के लिए आर्थिक सहायता देते हुए अनुपूरक सिंचाई के लिए प्रोत्साहन की व्यवस्था की गयी है; किसानों को बीज, उर्वरक और अन्य निविष्टियों की उपलब्धता सुनिश्चित करते हुए रबी उत्पादन बढ़ाने का सुनियोजित प्रयास और जल-संरक्षण तकनीकों के संबंध में अनेक नीतियाँ जारी करते हुए/परामर्श देते हुए तथा विविध केंद्रीय योजनाओं के अंतर्गत राज्यों को निधियों के उपयोग करने का लचीलापन स्वीकृत करना शामिल है। उपर्युक्त के मद्देनजर यह संभव है कि रबी उत्पादन खरीफ की हानि की क्षतिपूर्ति कर सके, जैसा कि पिछले वर्ष हुआ था, बशर्ते कि उत्तर-पूर्व मानसून और जलवायु संबंधी स्थिति वर्ष 2009-10 के रबी मौसम के दौरान अनुकूल बनी रहे।

चार्ट I.3 बुआई की तुलनात्मक स्थिति

I.8 आइएमडी के अनुसार मानसून मौसम के बाद (अक्तूबर-दिसंबर) 1 से 21 अक्तूबर की अवधि में संचयी वर्षा सामान्य से 12 प्रतिशत अधिक हुई, जबकि पिछले वर्ष की तदनुकूल अवधि में यह सामान्य से 40 प्रतिशत कम हुई थी। वर्षा के स्थानिक वितरण से पता चलता है कि मौसम विज्ञान विभाग के 36 उप विभागों में से 26 उपविभागों में (पिछले वर्ष 5 उपविभागों में) संचयी वर्षा अधिक/सामान्य हुई।

I.9 चतुर्थ अग्रिम पूर्वानुमान के अनुसार वर्ष 2008-09 में खाद्यान्नों का कुल उत्पादन 233.09 मिलियन टन के रिकार्ड स्तर पर पहुँच गया, जो पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 3 मिलियन टन अधिक था (सारणी 1.3)। खाद्यान्नों के उत्पादन में वृद्धि का मुख्य कारण रहा चावल और गेहूँ के उत्पादन में वृद्धि होना।

सारणी 1.3 : कृषि उत्पादन

(मिलियन टन)

फसल	2007-08	2008-09@
1	2	3
धान	96.7	99.2
खरीफ	82.7	84.6
रबी	14.0	14.6
गेहूं	78.6	80.6
मोटा अनाज	40.8	39.5
खरीफ	31.9	28.3
रबी	8.9	11.1
दालें	14.8	14.7
खरीफ	6.4	4.8
रबी	8.4	9.9
कुल खाद्यान्न	**230.8**	**233.9**
खरीफ	121.0	117.7
रबी	109.8	116.2
कुल तिलहन	29.8	28.2
खरीफ	20.7	17.9
रबी	9.0	10.3
गन्ना	348.2	271.3
कपास #	25.9	23.2
जूट और मेस्ता ##	11.2	10.4

@ : चौथा अग्रिम अनुमान।
# : प्रत्येक 170 कि.ग्रा. की मिलियन गांठ।
##: प्रत्येक 180 कि.ग्रा. की मिलियन गांठ।
स्त्रोत : कृषि मंत्रालय, भारत सरकार।

खाद्य प्रबंध

I.10 वर्ष 2009-10 के दौरान (20 अक्तूबर 2009 तक) चावल और गेहूँ की सरकारी खरीद पिछले वर्ष की तदनुकूल अवधि की तुलना में अधिक हुई (सारणी 1.4)। इसके परिणामस्वरूप भारतीय खाद्य निगम (एफसीआइ) और अन्य सरकारी एजेंसियों के पास खाद्यान्नों का कुल भंडार 1 जून 2009 को 54.8 मिलियन टन के सर्वोच्च स्तर पर पहुँच गया। तबसे इस भंडार में कमी सरकारी खरीद से अधिक उठाव किये जाने के कारण हुई है और यह 1 अक्तूबर 2009 को 44.3 मिलियन टन था। तथापि, चावल और गेहूँ, दोनों का भंडार उनके मानदंडों से अधिक है।

औद्योगिक कार्यनिष्पादन

I.11 वर्ष 2008-09की दूसरी छमाही के दौरान औद्योगिक उत्पादन की वृद्धि की गति घट गयी थी, जो चालू वित्तीय वर्ष के दौरान उस स्थिति से उबर रहा है। अल्पावधि तक गिरावट के बाद औद्योगिक वृद्धि दर दिसंबर 2008 में ऋणात्मक हो गई और उसके बाद धनात्मक हो गई, लेकिन वर्ष 2008-09 के अंत तक यह गति मंद रही। अप्रैल 2009 से उत्पादन में समुत्थान अधिक दृश्यमान रहा है और औद्योगिक उत्पादन में अगस्त 2009 में द्वि-अंकीय वृद्धि दर्ज की गयी, जो नवंबर 2007 के बाद रिकार्ड किये गये स्तर से अत्यधिक है। औद्योगिक उत्पादन में चालू वित्तीय वर्ष 2009-10 (अप्रैल-अगस्त) के दौरान 5.8 प्रतिशत वृद्धि पिछले वर्ष की तदनुकूल अवधि की तुलना में (4.8 प्रतिशत) अधिक हुई, जिसका कारण था जून-अगस्त 2009 में उत्पादन में अधिक वृद्धि होना (चार्ट I.4 और सारणी 1.5)। औद्योगिक उत्पादन के समुत्थान का आधार व्यापक रहा

सारणी 1.4 : खाद्यान्न भंडार का प्रबंधन

(मिलियन टन)

माह	खाद्यान्न का प्रारंभिक स्टॉक			खाद्यान्न की खरीद			खाद्यान्न का उठाव					अंतिम स्टॉक	मानदंड
	चावल	गेहूं	कुल	चावल	गेहूं	कुल	पीडीएस	ओ डब्ल्यू एस	ओम-एमएस-देशी	निर्यात	कुल		
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
2008-09	13.8	5.8	19.8	32.8	22.7	55.5	34.9	3.4	1.2	0.0	39.5	35.6	
2009-10@	21.6 (13.8)	13.4 (5.8)	35.6 (19.8)	11.1 (11.3)	25.4 (22.7)	36.5 (33.9)	14.3 (11.2)	0.9 (0.9)	0.0 (0.0)	0.0 (0.0)	15.2 (12.1)	उ.न. उ.न.	
2008													
जनवरी	11.5	7.7	19.2	4.5	0.0	4.5	2.9	0.3	0.0	0.0	3.2	21.4	20.0
अप्रैल	13.8	5.8	19.8	1.1	14.2	15.3	2.7	0.0	0.0	0.0	2.8	30.7	16.2
2009													
जनवरी	17.6	18.2	36.2	4.8	0.0	4.8	3.0	0.2	0.3	0.0	3.4	37.4	20.0
फरवरी	20.2	16.8	37.4	3.7	0.0	3.7	3.0	0.3	0.2	0.0	3.6	37.1	
मार्च	21.3	15.3	37.1	2.3	0.0	2.3	2.9	0.4	0.0	0.0	3.9	35.6	
अप्रैल	21.6	13.4	35.6	1.4	19.4	20.8	3.3	0.2	0.0	0.0	3.5	51.8	16.2
मई	21.4	29.8	51.8	1.9	4.4	6.4	3.6	0.2	0.0	0.0	3.9	54.8	
जून	20.4	33.1	54.8	1.3	1.1	2.4	3.3	0.4	0.0	0.0	3.7	53.2	
जुलाई	19.6	32.9	53.2	1.4	0.4	1.8	उ.न.	उ.न.	उ.न.	उ.न.	उ.न.	51.0	26.9
अगस्त	18.8	31.6	51.0	0.8	0.0	0.8	उ.न.	उ.न.	उ.न.	उ.न.	उ.न.	47.8	
सितंबर	17.2	30.1	47.8	0.4	0.1	0.5	उ.न.	उ.न.	उ.न.	उ.न.	उ.न.	44.3	
अक्तूबर*	15.4	28.5	44.3	4.0	0.0	4.0	उ.न.	उ.न.	उ.न.	उ.न.	उ.न.	उ.न.	16.2

पीडीएस : सार्वजनिक वितरण प्रणाली। **ओडब्ल्यूएस :** अन्य कल्याणकारी योजनाएं। **ओएमएस :** खुला बाजार बिक्री **उ.न.:** उपलब्ध नहीं
@ : खरीद 20 अक्तूबर तक तथा उठाव 31 जुलाई तक। * : 20 अक्तूबर तक सरकारी खरीद।
टिप्पणी : 1.स्टॉक में मोटा अनाज भी शामिल होने के कारण अंतिम स्टॉक के आंकड़े उन आंकड़ों से भिन्न हो सकते हैं जो प्रारंभिक स्टॉक और खरीद को जोड़कर तथा उठाव को घटाने पर आते हैं।
2. कोष्ठक में दिए गए आंकड़े 2008-09 की तदनुरूप अवधि के दौरान खाद्यान्न की खरीद/उठाव को दर्शाते हैं।
स्रोत : उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय, भारत सरकार।

है, जिसमें सभी तीनों क्षेत्रों, यथा, खनन, बिजली और विनिर्माण, में वृद्धि की गति तेज हुई है। अप्रैल-अगस्त 2009 के दौरान विनिर्माण क्षेत्र में वृद्धि की गति तेज होने का कारण था 'रबर, प्लास्टिक, पेट्रोलियम उत्पाद',

चार्ट I.4: औद्योगिक उत्पादन सूचकांक में वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष)

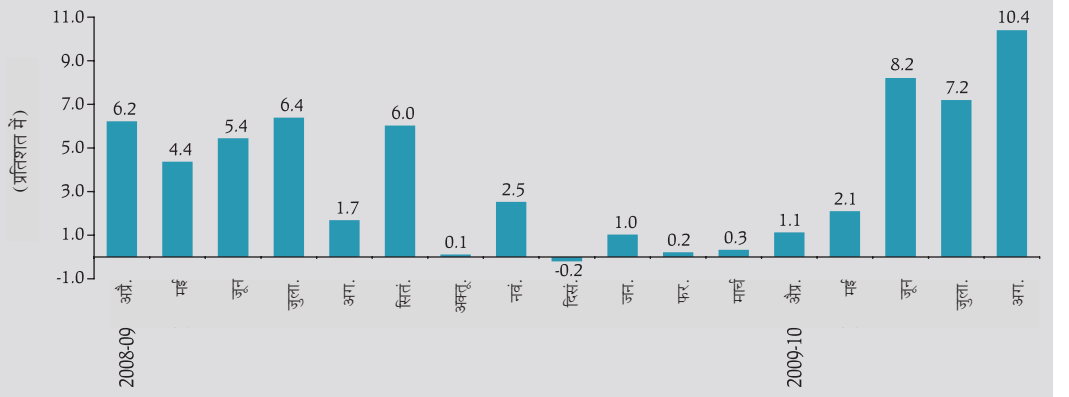

सारणी 1.5 : औद्योगिक उत्पादन सूचकांक : उद्योगों का क्षेत्रवार और उपयोग आधारित वर्गीकरण

(प्रतिशत)

उद्योग समूह	आइआइपी में भारांक	वृद्धि दर			भारित अंशदान #		
		अप्रैल-मार्च	अप्रैल-अगस्त		अप्रैल-मार्च	अप्रैल-अगस्त	
		2008-09	2008-09	2009-10 अ	2008-09	2008-09	2009-10 अ
1	2	3	4	5	6	7	8
क्षेत्रवार							
खनन	10.5	2.6	3.5	8.4	6.3	4.8	9.3
विनिर्माण	79.4	2.7	5.1	5.5	85.3	91.1	81.2
बिजली	10.2	2.8	2.3	6.6	8.3	4.0	9.5
उपयोग-आधारित							
मूल वस्तुएं	35.6	2.6	3.7	6.7	28.4	23.0	34.5
पूंजीगत वस्तुएं	9.3	7.3	8.3	3.2	34.1	20.6	6.8
मध्यवर्ती वस्तुए	26.5	-1.9	1.0	9.2	-18.4	5.5	41.5
उपभोक्ता वस्तुएं (क+ख)	28.7	4.7	7.6	3.1	54.2	49.2	17.4
क) उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुएं	5.4	4.5	5.7	18.1	12.4	8.9	23.8
ख) उपभोक्ता गैर टिकाऊ वस्तुएं	23.3	4.8	8.3	-1.5	41.7	40.3	-6.4
सामान्य	**100.0**	**2.7**	**4.8**	**5.8**	**100.0**	**100.0**	**100.0**

अ : अनंतिम। # : पूर्णांकन के कारण हो सकता है कि आंकड़ों का योग 100 न हो।
स्रोत : केंद्रीय सांख्यिकीय संगठन

'वस्त्र उत्पाद', 'ऊन, रेशम और मानव निर्मित फाइबर वस्त्र', 'काष्ठ और काष्ठ उत्पाद', 'परिवहन उपकरण से भिन्न मशीनें और उपकरण', 'धातु से इतर खनिज उत्पाद', 'मूल धातु और एलॉय उद्योग', 'चमड़ा और चमड़ा फर उत्पाद' और 'अन्य विनिर्माण उद्योगों' में उत्पादन में वृद्धि होना (सारणी 1.6)।

सारणी 1.6 विनिर्माण उद्योग समूह का कार्यनिष्पादन (अप्रैल-अगस्त 2009-10)

	ऋणात्मक	गिरावट	वृद्धि
1	2	3	4
1.	खाद्य उत्पाद	परिवहन उपकरण तथा पूर्जे	लकड़ी तथा लकड़ी के उत्पाद; फर्नीचर व फिक्सचर्स
2.	जूट तथा अन्य वनस्पति फाइबर टेक्सटाइल (कपास को छोड़कर)	रसायन तथा रासायनिक उत्पाद	अधात्विक खनिज उत्पाद
3.	धातु उत्पाद तथा पूर्जे	कागज तथा कागज उत्पाद	टेक्सटाइल उत्पाद
4.	पेय पदार्थ, तंबाकू तथा संबद्ध उत्पाद	कॉटन टेक्सटाइल्स	रबड़, प्लास्टिक, पेट्रोलियम और कोयले के उत्पाद
5.			अन्य विनिर्माण उद्योग
6.			ऊन, रेशम और मानव निर्मित रेशों से बने वस्त्र
7.			मूल धातु तथा मिश्र धातु उद्योग
8			मशीनरी तथा उपकरण
9.			चमड़े तथा फर के उत्पाद
आइआइपी में समग्र भारांक	**14.9**	**23.5**	**41.0**

I.12 उपयोग आधारित वर्गीकरण के अनुसार जबकि मूल और मध्यवर्ती वस्तु खंड में उल्लेखनीय तेजी आयी, पूँजीगत और उपभोक्ता वस्तुओं के खंड में कार्यनिष्पादन अप्रैल-अगस्त 2009-10 के दौरान पिछले वर्ष की तदनुकूल अवधि की तुलना में शिथिल बना रहा। मध्यवर्ती वस्तुओं के उत्पादन में निरंतर वृद्धि से यह पता चलता है कि प्राथमिक उद्योगों में उत्पादन तेज हुआ और इन्वेंट्री निवेश दृढ़ हुआ है। पूँजीगत वस्तु क्षेत्र में, जिसमें मार्च-मई 2009 के दौरान देखे गये ऋणात्मक उत्पादन की तुलना में जून 2009 में तगड़ी वृद्धि के साथ समुत्थान देखा गया, जुलाई 2009 में उत्पादन तेजी से गिरा, पर बाद में अगस्त 2009 में इसके उत्पादन में उछाल आया। टिकाऊ वस्तुओं के खंड में तगड़ी वृद्धि के बावजूद अप्रैल-अगस्त 2009-10 के दौरान उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादन की वृद्धि की गति धीमी रही, जो मुख्यत: गैर-टिकाऊ वस्तुओं के उत्पादन में संकुचन को प्रतिबिंबित करती है। तथापि, गैर-टिकाऊ वस्तुओं के खंड में जून-अगस्त 2009 की अवधि में धनात्मक वृद्धि होने से उसमें समुत्थान हुआ।

I.13 17 द्वि-अंकीय विनिर्माण उद्योग समूहों में से आठ औद्योगिक समूहों ने, जो आइआइपी में 38.4 प्रतिशत भार के लिए जिम्मेवार हैं, अप्रैल-अगस्त 2009 के दौरान कम/ऋणात्मक वृद्धि दर्ज की (सारणी 1.7)।

I.14 मूल वस्तु उद्योग ने अप्रैल-अगस्त 2009 के दौरान नियमित वृद्धि प्रदर्शित की है, जो मुख्यत: बिजली, धातु से इतर खनिज उत्पादों, यथा सीमेंट, और मूल धातु खंड में उन्नत कार्यसंपादन के कारण हुई है। लगातार सात महीनों तक (अगस्त 2008 से फरवरी 2009) वृद्धि में गिरावट के बाद मध्यवर्ती वस्तु क्षेत्र के उत्पादन में मार्च 2009 से सुधार हुआ और इसने अगस्त 2009 में द्विअंकीय वृद्धि दर्शायी। मध्यवर्ती वस्तुओं, यथा, 'ऊन, रेशम और मानव निर्मित फाइबर वस्त्र', 'काष्ठ एवं काष्ठ उत्पाद', 'धातु से इतर खनिज उत्पाद', 'धातु उत्पाद और पुर्जे, सिवाय मशीनरी उपकरणों के' और 'परिवहन उपकरण से भिन्न मशीनरी एवं उपकरण' के लिए वर्ष 2009-10 में मांग तेज हुई। इसके विपरीत पूँजीगत वस्तुओं के क्षेत्र में अप्रैल-अगस्त 2009 में पिछले वर्ष की इसी अवधि की तुलना में देखी गयी तेज गिरावट 'परिवहन उपकरण से भिन्न मशीनरी एवं उपकरण' और 'परिवहन उपकरण एवं पुर्जे' के उत्पादन में कम वृद्धि के कारण हुई। पूँजीगत वस्तुओं के उत्पादन की प्रवृत्ति अस्थिर बनी रही है, जो निवेश दृष्टिकोण में कुछ अनिश्चितता और आयातों से प्रतिस्पर्धा को प्रतिबिंबित करती है।

I.15 उपभोक्ता गैर-टिकाऊ वस्तुओं के उत्पादन में जुलाई और अगस्त 2009 के दौरान धनात्मक वृद्धि 'सूती वस्त्र', 'ऊन एवं मानव निर्मित फाइबर वस्त्र', 'कागज एवं कागज के उत्पाद', 'चमड़ा और फर के उत्पाद', 'रबर, प्लास्टिक, पेट्रोलियम और कोयला के उत्पाद' तथा 'परिवहन उपकरण से भिन्न मशीनरी एवं उपकरण' के कारण देखी गयी। उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं के उत्पादन की प्रवृत्ति स्थिर गति से जनवरी 2009 से बढ़ी, जो बड़े ट्यूबों, ट्रैक्टर टायरों, खिड़की में लगने वाले एयर कंडीशनर, रेफ्रिजरेटर, वाशिंग/लॉंड्री मशीन, बिजली के पंखे, टेलीफोन उपकरण, टीवी रिसीवर, पैसेंजर कार, मोटर साइकिल, आदि के उत्पादन से प्रेरित थी।

आधारभूत संरचना क्षेत्र

I.16 चालू वित्तीय वर्ष 2009-10 के दौरान प्रमुख आधारभूत संरचना क्षेत्र ने पिछले वर्ष इसी अवधि की 3.3 प्रतिशत वृद्धि की तुलना में 4.8 प्रतिशत की उच्चतर वृद्धि

सारणी 1.7 : विनिर्माण उद्योग समूहों में वृद्धि

(प्रतिशत)

उद्योग समूह	आइआइपी में भारांक	वृद्धि दर			भारित अंशदान #		
		अप्रैल-मार्च 2008-09	अप्रैल-अगस्त		अप्रैल-मार्च 2008-09	अप्रैल-अगस्त	
			2008-09	2009-10 अ		2008-09	2009-10 अ
1	2	3	4	5	6	7	8
1. खाद्य उत्पाद	9.08	-9.7	-2.5	-12.6	-28.1	-3.1	-13.7
2. पेय पदार्थ, तंबाकू तथा संबंधित उत्पाद	2.38	16.2	22.2	-3.3	30.7	22.7	-3.6
3. सूती वस्त्र	5.52	-1.9	1.2	0.7	-2.8	1.0	0.5
4. ऊन, रेशम और मानव निर्मित रेशों से बने वस्त्र	2.26	0.0	-1.2	11.9	0.0	-0.7	5.8
5. जूट और अन्य वनस्पति फाइबर वस्त्र (सूती को छोड़कर)	0.59	-10.1	-6.5	-16.4	-1.1	-0.4	-0.9
6. वस्त्र उत्पाद (परिधान सहित)	2.54	5.7	4.7	9.5	6.9	3.1	5.9
7. लकड़ी,लकड़ी के उत्पाद, फर्नीचर और फिक्सचर	2.70	-9.6	-6.7	11.8	-5.3	-2.1	3.0
8. कागज तथा कागज के उत्पाद तथा मुद्रण, प्रकाशन तथा संबंधित उद्योग	2.65	1.9	3.1	2.7	2.0	1.9	1.5
9. चमड़े तथा चमड़े एवं फर उत्पाद	1.14	-6.9	0.8	1.3	-2.1	0.1	0.2
10. रसायन एवं रासायनिक उत्पादन (पेट्रोलियम एवं कोयले के उत्पादों को छोड़कर)	14.00	4.1	8.1	5.0	29.0	31.8	18.9
11. रबड़, प्लास्टिक, पेट्रोलियम एवं कोयले के उत्पाद	5.73	-1.5	-4.2	13.2	-3.5	-5.3	14.1
12. अधात्विक खनिज उत्पाद	4.40	1.2	0.7	7.6	2.7	0.9	8.5
13. मूल धातु और मिश्र धातु उद्योग	7.45	4.0	6.6	7.1	14.8	13.2	13.3
14. धातु उत्पाद और पुर्जे (मशीनरी और उपस्कर को छोड़कर)	2.81	-4.0	-0.8	-0.2	-3.1	-0.3	-0.1
15. परिवहन उपस्कर से इतर मशीनरी तथा उपस्कर	9.57	8.8	8.3	9.5	53.2	26.1	28.7
16. परिवहन उपस्कर तथा पुर्जे	3.98	2.5	11.2	9.1	6.1	14.1	11.3
17. अन्य विनिर्माण उद्योग	2.56	0.4	-4.0	10.8	0.6	-2.9	6.6
विनिर्माण - कुल	79.36	2.7	5.1	5.5	100.0	100.0	100.0

अ : अनंतिम। # : पूर्णांकन के कारण हो सकता है कि आंकड़ों का योग 100 न हो।

स्रोत : केंद्रीय सांख्यिकीय संगठन।

दर्ज की, जिसका कारण था कोयला, सीमेंट और बिजली के उत्पादन की गति में तेजी आना (चार्ट I.5)। तथापि, कच्चे तेल और पेट्रोलियम रिफाइनरी उत्पादों के उत्पादन में गिरावट दर्ज की गयी। तैयार इस्पात के उत्पादन में इस अवधि के दौरान कम वृद्धि दर्ज की गयी (चार्ट I.6)।

सेवा क्षेत्र

I.17 सेवा क्षेत्र में वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही में 7.7 प्रतिशत की कम वृद्धि दर्ज की गयी, जबकि पिछले वर्ष की तदनुकूल अवधि के दौरान इसमें10.0 प्रतिशत की द्वि-अंकीय वृद्धि दर्ज की गयी थी। उप-क्षेत्रों, यथा, 'व्यापार,

चार्ट I.5 : बुनियादी ढांचा उद्योगों में वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष)

होटल, परिवहन एवं संचार' तथा 'निर्माण' में पूर्ववर्ती दो तिमाहियों में हुई वृद्धि की तुलना में अधिक वृद्धि दर्ज की गयी, लेकिन यह वर्ष 2008-09 की पहली तिमाही में हुई वृद्धि की तुलना में कम रही। तथापि, 'वित्तपोषण, बीमा, स्थावर संपदा और कारोबारी सेवाओं' में वर्ष 2008-09 की पहली तिमाही की तुलना में तेज वृद्धि दर्ज की गयी, जो वित्तीय बाजारों की स्थिति में सुधार को प्रतिबिंबित करती है (देखें सारणी 1.1)।

I.18 सेवा-क्षेत्र में मंदी वास्तविक जीडीपी वृद्धि में इसके योगदान में प्रतिबिंबित होती है, जो कम हो कर वर्ष 2009-10 की पहली तिमाही में 4.9 प्रतिशत रह गयी, जबकि यह पिछले वर्ष की तदनुकूल अवधि के दौरान 6.3 प्रतिशत थी (सारणी 1.8)।

I.19 अब तक वर्ष 2009-10 के लिए सेवा-क्षेत्र कार्यकलाप के अग्रणी संकेतों से यह पता चलता है कि विदेशी पर्यटकों के आगमन में कमी आयी है और वाणिज्यिक वाहनों का उत्पादन कम हुआ है, जबकि परिवहन सेवाओं से संबंधित अधिकांश संकेतक भी धीमे दृष्टिकोण का प्रदर्शन करते हैं। तथापि, सीमेंट के उत्पादन में बदलाव आया है और उसके साथ-साथ

चार्ट I.6 बुनियादी ढांचा उद्योगों में क्षेत्रवार वृद्धि

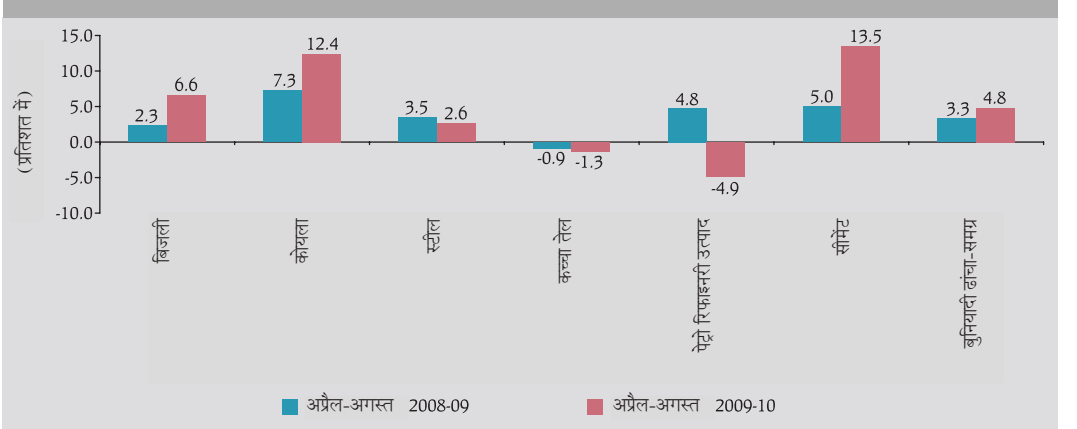

सारणी 1.8: वास्तविक जीडीपी वृद्धि में सेवा क्षेत्र का योगदान

(प्रतिशत)

वर्ष / तिमाही	निर्माण	व्यापार, होटल, परिवहन और संचार	वित्तपोषण, बीमा, स्थावर संपदा और कारोबारी सेवाए	सामुदायिक, सामाजिक और व्यक्तिगत सेवाएं	कुल सेवाएं
1	2	3	4	5	6
2005-06	1.1	3.0	1.5	1.0	6.7
2006-07	0.8	3.5	1.9	0.8	6.9
2007-08	0.7	3.4	1.7	0.9	6.7
2008-09 सं.अ.	0.5	2.5	1.1	1.7	5.9
2008-09 : ति1	0.6	3.5	1.0	1.0	6.3
: ति2	0.7	3.4	1.0	1.3	6.4
: ति3	0.3	1.6	1.2	2.7	5.7
: ति4	0.5	1.8	1.3	1.7	5.4
2009-10 : ति1	0.5	2.3	1.2	0.9	4.9

सं.अ.:संशोधित अनुमान।
स्रोत : केंद्रीय सांख्यिकीय संगठन।

इस्पात के उत्पादन में उछाल आया है, जो यह बताता है कि निर्माण संबंधी कार्यकलापों में तेजी आयी है। घरेलू हवाई अड्डों पर भी यात्रियों के आगमन में वृद्धि दर्ज की गयी है (सारणी 1.9)। सेल फोन कनेक्शनों में काफी वृद्धि होने से दूर-संचार सेवाओं में उछाल बना रहा है।

सारणी 1.9: सेवा क्षेत्र गतिविधि के संकेतक

(वृद्धि प्रतिशत में)

			अप्रैल-सितंबर	
	2007-08	2008-09	2008-09	2009-10
1	2	3	4	5
पर्यटकों का आगमन	12.2	-2.5	8.9	-2.8
वाणिज्यिक वाहनों का उत्पादन#	4.8	-24.0	4.4	-7.4
मालभाड़े से रेलवे को राजस्व	9.0	4.9	18.9	7.5
सेलफोन कनेक्शन ^	38.3	44.8	24.9	62.3
मुख्य बंदरगाहों में कार्गो प्रबंध ^	12.0	2.1	8.4	1.8
नागरिक उड्डयन				
निर्यात कार्गो प्रबंध ^	7.5	3.4	7.7	1.5
आयात कार्गो प्रबंध ^	19.7	-5.7	6.2	-9.3
अंतरराष्ट्रीय टर्मिनल में यात्रियों का प्रबंध ^	11.9	3.8	7.8	1.8
देशी टर्मिनल में यात्रियों का प्रबंध ^	20.6	-12.1	-5.1	2.4
सीमेंट ##	7.8	7.5	5.0	13.5
इस्पात ##	6.8	0.6	3.5	2.6

\# : परिवहन के प्रमुख संकेतक
^ : 2009-10 के आंकड़े अप्रैल-अगस्त के हैं।
: निर्माण से संबंधित प्रमुख संकेतक तथा 2009-10 के आंकड़े अप्रैल-अगस्त के हैं।
स्रोत : पर्यटन मंत्रालय; वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय; सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय; भारतीय रिज़र्व बैंक तथा भारतीय अर्थव्यवस्था निगरानी केंद्र।

I.20 सारांशत:, जीडीपी वृद्धि में प्रतिबिंबित सकल आपूर्ति की स्थिति यह बताती है कि यद्यपि वर्ष 2008-09 की दूसरी छमाही में आयी मंदी की स्थिति से उबरने की स्थिति बनी है, फिर भी पुनरुत्थान की गति धीमी बनी हुई है। दक्षिण-पश्चिम मानसून मौसम के दौरान हुई कम और असमान वर्षा के साथ-साथ कुछ राज्यों में हाल में आयी बाढ़ ने वर्ष 2009-10 के दौरान खरीफ में कम उत्पादन की जोखिम को बढ़ा दिया है। फिर भी, हाल में हुए अनुभव और सरकार द्वारा शुरू किये गये उपायों को देखते हुए रबी का उत्पादन खरीफ के उत्पादन में कमी की अंशत: भरपाई कर सकेगा, यदि जलवायु और उत्तर-पूर्व मानसून का मौसम रबी मौसम के दौरान अनुकूल बना रहे। चालू वित्तीय वर्ष 2009-10 (अप्रैल-अगस्त) के दौरान औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि (5.8 प्रतिशत) के संकेत मिले हैं, जबकि वर्ष 2008-09 की दूसरी छमाही में उत्पादन में गिरावट देखी गयी थी। इसी प्रकार, वर्ष 2009-10 के दौरान (अप्रैल-अगस्त) मूल आधारभूत संरचना क्षेत्र ने भी पिछले वर्ष की तुलनीय अवधि से उच्चतर वृद्धि (4.8 प्रतिशत) दर्ज की है, जिसे कोयला, सीमेंट और बिजली के उत्पादन ने सहारा दिया है। सेवा-क्षेत्र के लिए कुछ अग्रणी संकेतक भी वृद्धि में तेजी के संकेत देते दिखाई पड़ते हैं।